संपादकीय

शिवाजी जयंती पर विशेष : भूषण-काव्य के नजरिये से छत्रपति शिवाजी

शिवाजी के बारे में अधिकतर लोग कुछ-न-कुछ जानते हैं, लेकिन रीति काल के कवि भूषण ने जिस प्रकार उन्हें चित्रित किया है, वह बेजोड़ है। शिवाजी के बारे में भूषण का कहना इसलिए भी महत्त्व रखता है, क्योंकि वे न केवल शिवाजी के समकालीन थे, अपितु उनके आश्रय में भी रहे। आश्रय में तो वे कई अन्य राजाओं बाजीराव, जयसिंह, छत्रसाल, साहूजी, अनिरुद्ध, राव बुद्ध, कुमायूँ नरेश के भी थे। यही नहीं, शिवाजी के घोर शत्रु औरंगजेब और दारा शिकोह की भी प्रशंसा में रचे कुछ पद मिलते हैं, किंतु वे भूषण के ही हैं, इसका पुख्ता प्रमाण नहीं मिलता। भूषण ने अपनी काव्यात्मक प्रतिभा का सर्वाधिक उपयोग शिवाजी और छत्रसाल के यशोगान में किया है। इनमें भी शिवाजी का हिस्सा ज्यादा बड़ा है। भूषण के अपने ही पद से बनी-बिगड़ी उक्ति 'सिवा कौ बखानौ, बखानौ छत्रसाल कौ' काफी प्रसिद्ध है। उनके द्वारा शिवाजी का चरित्र-चित्रण तथ्यपरक और ऐतिहासिक होने की बजाय आलंकारिक अधिक है। आश्रित कवियों से तथ्यपरकता और वस्तुनिष्ठता की अपेक्षा रखना व्यर्थ है, क्योंकि उनका अभिप्रेत इतिहास नहीं, बल्कि अपने आश्रयदाता राजा के स्तुतिपूर्ण गुणगान में अपनी रचनात्मकता न्योछावर कर देना था, जिसके एवज में उन्हें राजा का विशेष अनुग्रह, आश्रय और मोटा धन मिलता था। बिहारीलाल के बारे में प्रचलित है कि उन्हें राजा जयसिंह एक-एक दोहे पर एक-एक अशर्फी देते थे। प्रतिभाओं, कवियों, कलाकारों, आचार्यों के राज्याश्रय व संरक्षण की परंपरा काफी पुरानी है। सामान्यतः शासन-सत्ता की छत्रछाया में ही कला, साहित्य, गुरुत्व की गरिमा स्थापित हो पाती है, उनकी उदासीनता व निरपेक्ष रवैये में बहुत कम और विरोध में तो बिल्कुल भी नहीं। यह स्थिति आज भी अपने बदले रूप में कायम है। आज भी उन्हीं की प्रतिभा, विद्वता, मेधा, राजनीति-रणनीति का डंका बजता है, जिन्हें प्रत्यक्षतः या परोक्षतः पद, धन, ग्लैमर और सुविधाओं के साथ शासन-सत्ता का सहयोग मिलता है, अन्यथा इसके अभाव में तो बहुत-सारी प्रतिभाएँ कुंठित होकर असमय काल के गाल में समा जाती हैं। अस्तु, काव्य की कसौटी साहित्यिकता-काव्यात्मकता और आलंकारिकता है, लेकिन यह सब तथ्यपरक व सत्य-सापेक्ष ही शोभा देता है। उत्कृष्ट काव्य-साहित्य से यह उम्मीद तो रहती ही है कि उससे इतिहास का उल्लंघन कतई न हो, सत्य की ही प्रतीति हो। महान् दार्शनिक प्लेटो तो कवियों को राज्य से बाहर निकालने के पक्ष में थे, क्योंकि उनके अनुसार कवि जो लिखता है, वह सत्य से बहुत दूर होता है। प्लेटो के अनुसार, पहला सत्य ईश्वर निर्मित नैसर्गिक सत्य है, दूसरा सत्य दृश्यमान सत्य है और तीसरा सत्य वह है जो कवियों द्वारा अभिव्यक्त होता है। ऐसे में कवि द्वारा चित्रित सत्य नैसर्गिक व वास्तविक सत्य से तिहरे अधिक दूरी पर होने के कारण एकदम निचले दर्जे का होता है, सीधे कहें तो सत्य होता ही नहीं।

बहरहाल, जहाँ सारे ही कवि अपने-अपने आश्रयदाताओं का स्तुतिगान कर रहे हों, वहाँ भी कवियों की अपनी-अपनी पृष्ठभूमि, प्रतिभा, प्रयोजन और संस्कार के कारण अभिव्यंजना में अंतर स्वाभाविक होता है। कवि भूषण इस दृष्टि से विशेष हैं कि उन्होंने तत्कालीन धारा के अनुरूप शृंगारिक मनोरंजन न करके, उसका अतिक्रमण करते हुए अपने आश्रयदाता का शौर्यगान किया। यद्यपि 'शिवराजभूषण' के कुछ पदों में शृंगारिक माधुर्य का प्राधान्य है, तथापि भूषण ने अधिकांशतः वीर काव्य सृजित किए; वीर रस में भी

युद्ववीरता को प्रधानता दी, जहाँ उमंग-उत्साह का लाजवाब संचार है। यह उनका सौभाग्य था कि उन्हें उन शिवाजी का आश्रय मिला, जिन्हें तब और अब की बहुसंख्यक हिन्दू जनता महानायक के रूप में देखती-समझती है। इसलिए विषय-रूप में शिवाजी की वीरता का चित्रण समय की नजाकत से आगे जाने वाला तथा उसे सुदिशा देने वाला सिद्ध हुआ। वह हिन्दू राष्ट्रीयता का अभिप्रेरक था, जातीयता का उद्बोधक था और जनमानस को जागृत-उद्दीप्त कर आकृष्ट करने के लिए यथेष्ट था। इसलिए 'शब्द बह्म है' की तर्ज पर भूषण ने कहा कि ब्रह्म सदृश पवित्र वाणी कलियुग में रीतिकालीन कवियों द्वारा विषयासक्त राजाओं के गुणगान से अपवित्र हुई, किंतु वही शिवाजी के पुण्य चरित्र रूपी सरोवर में गोते लगाकर पुनः पवित्र हो गई है -

भूषण यों कलि के कविराजन, राजन के गुण गाय नसानी।
पुण्य चरित्र सिवा सरजै सर, हाय पवित्र भई पुनि बानी।।

आखिर छत्रपति शिवाजी महाराज में ऐसा क्या था कि उनकी प्रशंसा से वाणी स्वतः स्वच्छ-शुद्ध हो जाए। वस्तुतः शिवाजी मुगलकालीन भारत के ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने अपने चातुर्य, साहस और पराक्रम से भारत के अखिल इतिहास में अपना स्थान बनाया। वे कुशल योद्धा और सफल रणनीतिकार थे, छापामार युद्ध में पारंगत थे। उन्होंने औरंगजेब से लंबा संघर्ष करते हुए पश्चिम भारत में मराठा साम्राज्य की नींव रखी। इस प्रकार वे 'हिन्दू हृदय सम्राट' थे। कवि भूषण के अनुसार, काशी में कला न होती, मथुरा मस्जिद बन गई होती और यदि शिवाजी न होते तो सब लोगों की सुन्नत भी हो जाती - 'कासिहू ते कला जाती, मथुरा मजीद होती/सिवाजी न होते तौ सुनति होति सबकी।' उस समय हिन्दू समाज की ऐसी ही सोच व अंतर्दशा थी। इसलिए वह अपना और अपनी संस्कृति के रक्षक-उद्धारक के रूप में शिवाजी को आलंबन मानने लगी थी। कवि ने इसी भाव को वाणी दी है -'हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की/कांधे में जनेऊ राख्यों माला राखी गर मै।' शिवाजी के कंधों पर शेषनाग की तरह पूरी पृथ्वी का भार होना कहा -'तेरे हीं भुजान पर भूतल को भार/कहिबे को सेसनाग दिननाग हिमाचल है।' हिंदुस्तान की मर्यादा-प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला माना -'राखी हिन्दुवानी हिन्दुवान को तिलक राख्यौ' और 'बाढ़ी मरजाद जस हद्द हिन्दुवाने की।' उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक सभी जगहों पर उन्हीं का एकछत्र दावा चलता है -'पूरब पछांह देश दच्छिन ते उत्तर लौं/जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को।'

शिवाजी की प्रशंसा-मात्र के लिए भूषण ने 'शिवराजभूषण, 'शिवा बावनी की रचना की। इनमें उनके प्रताप, रणकौशल, युद्ध-प्रयाण, पराक्रम, विजयाभियान, अस्त्र-शस्त्र आदि की ओजभरी उत्साहवर्द्धक छटा का आलंकारिक निदर्शन हुआ है, जहाँ मालोपमा, अत्युक्ति, अतिशयोक्ति, रूपक, यमक, उपमा, अनुप्रास, अप्रस्तुत-प्रशंसा आदि अलंकारों का अद्भुत संयोजन है। शिवाजी के प्रचण्ड तेज-वेग के सामने शत्रुओं की दारुण दशा का एक उदाहरण देखिए कि किस प्रकार जंभासुर पर इन्द्र, समुद्र पर बाड़वानल, रावण पर राम, बादल पर हवा, कामदेव पर शंभु, सहस्रबाहु पर परशुराम, तना पर दावानल, मृगों के झुंड पर चीता, हाथी पर शेर, अंधेरे पर प्रकाश और कंस पर कृष्ण भारी पड़ते हैं, उसी प्रकार म्लेच्छों पर शिवाजी शेर के समान हावी होते हैं-

दावा द्रुम दंड पर, चीता मृगझुंड पर।
भूषण वितुण्ड पर, जैसे मृगराज हैं।।

तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर।
त्यों म्लेच्छ बंस पर, शेर शिवराज हैं।।

चूँकि शिवाजी महाप्रतापी राजा थे, अतः उनका प्रभाव दूसरों की तरह स्त्रियों पर भी पड़ना लाजिमी था। यमक अलंकार के सहारे भूषण ने इसकी अभिव्यक्ति अतीव सुंदर ढंग से की है। शिवाजी के त्रास-भय से ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं में रहने वाली स्त्रियाँ ऊँची गुफाओं में रहने को विवश हैं, जायकेदार राजसी भोजन करने वाली रमनियाँ वनों में केवल कंद-मूल खाकर रहने को लाचार हैं। दिन में तीन बार खाने वाली केवल तीन बेर खाकर रह रही हैं। जिनके अंग-प्रत्यंग आभूषणों से लदे होने के कारण शिथिल पड़ जाते थे, उनके अंग भूख से बेहाल होकर शिथिल हो गए हैं। जिन पर चौबीसों घंटे पंखा डुलाया जाता था, वे खुद निर्जन वनों में इधर-उधर डुलने को मजबूर हैं। जो नगों से जडे गहने पहनती थीं, वे वस्त्रों के अभाव में कड़ाके की सर्दी में भी नग्न हैं -

कंद मूल भोग करें कंद मूल भोग करें,
तीन बेर खातीं ते वे तीन बेर खाती हैं।
भूषण शिथिल अंग भूषण शिथिल अंग,
बिजन डुलातीं ते वे बिजन डुलाती हैं।
भूषण भनत सिवराज वीर तेरे त्रास,
नगन जड़ातीं ते वे नगन जड़ाती हैं।

शिवाजी इकट्ठे इतने-सारे गुणों से आपूरित थे, अतः उन्हें अवतार मानते हुए भूषण ने उनके आश्रय से इतर अन्यत्र जाने को अनुचित बताया है, 'शिवाजी के यहाँ नहीं तो कहीं नहीं' का भावबोध व्यक्त किया है

तुम सिवराज ब्रजराज अवतार आज,
तुमही जगत काज पोखत भरत हां।
तुम्हैं छोड़ी याते काहि विनती सुनाऊँ मैं,
तुम्हरे गुण गाऊँ तुम ढीले क्यों परत हौं।।

वस्तुतः शिवाजी हताश-निराश जाति के लिए मनोमालिन्य छाँटने वाली आशा की प्रदीप्त किरण सदृश थे। कुशल संगठनकर्ता, अनुशासनप्रिय, प्रगतिशील विचार-व्यवहार के धनी, दृढ़ संकल्पवान, प्रतिभाशाली और कई कलाओं में एकसाथ माहिर मानवमात्र की स्वाधीनता के अदम्य पक्षधर थे। अत्याचारी आक्रांताओं के साथ-साथ उन्होंने भीतरी विघटनकारी, आततायी ताकतों का डटकर मुकाबला किया। भूषण ने उनके चरित्र का बखान करके युगधर्म और कविधर्म का एकसाथ अच्छा निर्वाह किया है। इन दोनों के परस्पर व्यक्तित्व व कवित्व से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को भी कालांतर में ऊर्जा-उष्मा मिलती रही। सुभद्रा कुमारी चौहान ने आजादी के दिनों में वीरों के वसंत का रूप-स्वरूप ढूँढ़ते यों ही नहीं याद किया था कि 'भूषण अथवा कवि चंद नहीं/बिजली भर दे वह छंद नहीं।' आसन्न संकट उत्पन्न होने पर इनकी प्रासंगिकता नए-नए रूपों में तलाशी जाती है, जो किसी कौम-विशेष खासकर मुसलमानों के खिलाफ न जाकर देशविरोधी आंतरिक-वाह्य शत्रुओं से जूझने की शक्ति प्रदान करती है।